AMOGHVARTA
ISSN : 2583-3189

छत्तीसगढ़ का नामकरण – एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. डी. एन. खुटे
सहायक प्राध्यापक
इतिहास अध्ययनशाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

किसी प्रदेश के इतिहास एवं संस्कृति को प्रभावित करने वाले आधारभूत कारणों में संबंधित भू–भौतिकी पर्यावरण को नियायक तत्व के रूप में स्वीकार किया जाता है। भारतवर्ष के अंतर्गत अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के कारण आदिम संस्कृति की विशेषताओं को संजोये रखने में समर्थ अनेक छोटे–छोटे प्रदेश विद्यमान है। इस दृष्टि से छत्तीसगढ़ प्रदेश का उल्लेखनीय स्थान माना जा सकता है। छत्तीसगढ़ प्राचीन काल से ही भू–विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, नृतत्व शास्त्र, समाज शास्त्र एवं इतिहास के अध्येताओं के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा है। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् सन् 1948 में छत्तीसगढ़ की 14 रियासतों का मध्यभारत के अंतर्गत विलीनीकरण हुआ और सन् 1956 से मध्यप्रदेश का घटक बना। लोकसभा व राज्यसभा द्वारा मध्यप्रदेश पुनर्गठन विधेयक 2000 पारित होने के बाद तथा राष्ट्रपति की मंजूरी मिलते ही भारत की संघीय सीमाओं की इबारत फिर से लिखी गयी। मध्यप्रदेश विधानसभा में 1 मई 1998 को पृथक छत्तीसगढ़ राज्य के गठन का संकल्प पारित हुआ। भारत के तत्कालीन गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने ''छत्तीसगढ़ संशोधन विधेक'' 25 जुलाई 2000 को लोकसभा में पेश किया। लोकसभा ने 31 जुलाई 2000 को तथा राज्यसभा ने 9 अगस्त 2000 को इस विधेयक को पारित कर दिया। तत्पश्चात् 28 अगस्त 2000 को तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के.आर.नारायण ने स्वीकृति प्रदान की। मध्यप्रदेश राज्य की 45वीं जन्मतिथि पर 1 नवम्बर 2000 को उसे विभाजित करके देश के 26वें राज्य के रूप में छत्तीसगढ़ का प्रादुर्भाव हुआ। रायपुर इस राज्य की राजधानी बनाई गई।

मुख्य शब्द

रियासत, पुनर्गठन विधेयक, भू वैज्ञानिक संरचना, कोसल, चेदिसगढ़, बंदोबस्त.

छत्तीसगढ़ मध्यप्रदेश के दक्षिण पूर्व में 17^0.46'' उत्तरी अक्षांश से 24^0.5'' उत्तरी अक्षांश तथा 80^0.15'' पूर्वी देशांतर रेखाओं के मध्य स्थित है।[1] इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1,35,194 वर्ग कि.मी. है जो मध्यप्रदेश का 30.52 प्रतिशत तथा भारत का 4.14 प्रतिशत भाग है। यह प्रदेश भारत के अन्य प्रदेशों जैसे केरल, अरूणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश से काफी बड़ा है। छत्तीसगढ़ की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 25,540,196 है।[2]

छत्तीसगढ़ राज्य न तो किसी अंतर्राष्ट्रीय सीमा को छूती है और न ही किसी समुद्री सीमा को। छत्तीसगढ़ भौगोलिक रूप से भारत के 6 राज्यों से घिरा है– उत्तर में उत्तर प्रदेश, उत्तर पूर्व में झारखण्ड, दक्षिण पूर्व में उड़ीसा,

दक्षिण में आंध्रप्रदेश, दक्षिण पश्चिम में महाराष्ट्र एवं पश्चिम में मध्यप्रदेश। यह प्रदेश अपने निकटतम समुद्र बंगाल की खाड़ी से लगभग 400 कि.मी. दूर स्थित है जिसकी समुद्र सतह से ऊंचाई लगभग 500 मीटर है।[3] इसका तलीय चित्र स्थूल दृष्टि से देखने पर एक पंखे का आकार भाषित होता है।[4] वैसे यह समुद्री घोड़े की आकृति से ज्यादा मिलता है जो पश्चिम से पूर्व की ओर संकरा होता गया है। इसका उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तार आयताकार में है।[5]

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के समय कुल 16 जिले थे, वर्तमान में 33 जिले एवं 5 संभाग है। छत्तीसगढ़ राज्य का भौगोलिक सीमा में राजनीतिक परिवर्तन के साथ–साथ सीमाएँ परिवर्तन होते रहे है। भारत की स्वतंत्रता के पूर्व छत्तीसगढ़ चौदह रियासतों में विभक्त था जो सेंट्रल प्राविसेंस का ही एक घटक था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक अमरकंटक, मंडला, बालाघाट का कुछ हिस्सा, उड़ीसा का संबलपुर, सोनपुर छत्तीसगढ़ भू–भाग का हिस्सा रहा है। उड़ीसा का संबलपुर 1905 तक छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख जिला था, उसके पृथक होते ही उसकी पांच रियासतें छत्तीसगढ़ से हट गयी। इसके बदले झारखण्ड की पांच रियासतें सरगुजा, चांगभखार, उदयपुर, कोरिया व जशपुर सन् 1905 में छत्तीसगढ़ में सम्मिलित की गयी।[6]

छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् सन् 1948 में छत्तीसगढ़ की 14 रियासतों का मध्यभारत के अंतर्गत विलीनीकरण हुआ और सन् 1956 से मध्यप्रदेश का घटक बना। लोकसभा व राज्यसभा द्वारा मध्यप्रदेश पुनर्गठन विधेयक 2000 पारित होने के बाद तथा राष्ट्रपति की मंजूरी मिलते ही भारत की संघीय सीमाओं की इबारत फिर से लिखी गयी।

मध्यप्रदेश विधानसभा में 1 मई 1998 को पृथक छत्तीसगढ़ राज्य के गठन का संकल्प पारित हुआ। भारत के तत्कालीन गृह मंत्री श्री लाल कृष्ण आडवाणी ने ''छत्तीसगढ़ संशोधन विधेक'' 25 जुलाई 2000 को लोकसभा में पेश किया। लोकसभा ने 31 जुलाई 2000 को तथा राज्यसभा ने 9 अगस्त 2000 को इस विधेयक को पारित कर दिया, तत्पश्चात् 28 अगस्त 2000 को तत्कालीन राष्ट्रपति श्री के.आर.नारायण ने स्वीकृति प्रदान की। मध्यप्रदेश राज्य की 45वीं जन्मतिथि पर 1 नवम्बर 2000 को उसे विभाजित करके देश के 26वें राज्य के रूप में छत्तीसगढ़ का प्रादुर्भाव हुआ। रायपुर इस राज्य की राजधानी बनाई गई। इस समय भारत के प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी थे। 31 अक्टूबर – 1 नवम्बर 2000 की रात्रि को छत्तीसगढ़ के प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में नवोदित राज्य के प्रथम राज्यपाल श्री दिनेशनंदन सहाय ने श्री अजीत प्रमोद कुमार जोगी को रायपुर के राजकुमार कुमार कॉलेज में शपथ ग्रहण कराया। वर्तमान में छत्तीसगढ़ में लोकसभा की 11 व राज्यसभा की 05 तथा विधानसभा की 90 सीटें है।[7]

छत्तीसगढ़ प्रदेश की भू वैज्ञानिक संरचना में विभिन्न युगों की शैलें मिलती है। यहां आर्कियन्स, धारवाड़, कुड़प्पा, गोण्डवाना एवं दक्कन मुख्य है। इसके अतिरिक्त प्रदेश के निर्माण में रायोलाइट, फेल्साइट, लैटेराइट, एल्युमिनियम एवं लमेटा बेड्स का भी प्रभाव है। इन शैलों का कृषि में विशेष महत्व है।

उच्चावय की दृष्टि से छत्तीसगढ़ प्रदेश को मैदानी व पठारी प्रदेशों में विभाजित किया जा सकता है। यहां का मैदान कड़प्पायुगीन चूने के पत्थर के चट्टानों से निर्मित है।[8] इस मैदान को उत्तरी एवं दक्षिणी मैदानों में विभाजित किया जा सकता है। उत्तरी मैदान में बिलासपुर का मैदान, हसदो माण्ड क्षेत्र एवं माण्डपार क्षेत्र आते है। दक्षिण मैदान में शिवनाथ पार मैदान, महानदी, शिवनाथ नदी का दोआब एवं महानदी पार सम्मिलित है। पठारी भाग मैदानी भाग को घेरे हुए है। यह आर्कियन युगीन ग्रेनाईट और नीस चट्टानों से निर्मित भाग है। यह भू आकृति विभाग देश का पुराना प्रदेश है, यह गोण्डवाना लैण्ड का भाग है। क्रिटेशियस काल में गोण्डवाना लैण्ड के खण्डित होने से दक्षिणी प्रायद्वीपीय पठार का आविर्भाव हुआ, इसी में यह प्रदेश अवस्थित है। छत्तीसगढ़ के पठारी भाग को चार भागों में बांटा जा सकता है[9]:

1. सरगुजा–रायगढ़ का पठार।
2. दुर्ग–रायपुर का उच्च प्रदेश।
3. मैकाल श्रेणी।
4. बस्तर का पठार।

उत्तर में सरगुजा–रायगढ़ के पठार के अंतर्गत देवगढ़ उच्चभूमि, रायगढ़ का पठार, मैनपाट, छुरी की पहाड़ियाँ, सरगुजा बेसीन, हसदो बेसीन और पेण्ड्रा–लोरमी पठार आते है। पश्चिम भाग में मैकल का फैलाव है। दक्षिण भाग में बस्तर का पठार फैला है। इसमें कावेरी बेसीन, कांकेर बेसीन, अबूझमाड़ की पहाड़ियाँ, उत्तरी पूर्वी बस्तर का पठार, गोदावरी, इन्द्रावती का निचला मैदान तथा सबरी का निचला मैदान शामिल है।[10]

महानदी इस मैदान के प्रायः मध्य से जाती है और मैदानी क्षेत्र के अंतर्गत रायपुर, दुर्ग एवं बिलासपुर जिले के दक्षिणी भाग आते है। यह मैदान उपज की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है और इसमें विकास होने की पूर्ण संभावना है।[11] छत्तीसगढ़ की प्रमुख नदियों में महानदी, शिवनाथ, इन्द्रावती, हसदो, माण्ड, पैरी, खारून, जोंक, आगर एवं केलो है।

छत्तीसगढ़ का नामकरण

वर्तमान में जो क्षेत्र छत्तीसगढ़ कहलाता है पहले यह क्षेत्र इस नाम से नहीं जाना जाता था। आधुनिक प्रयोग होने के कारण छत्तीसगढ़ का उल्लेख न तो किसी पुराण में मिलता है और न ही किसी अन्य धार्मिक ग्रन्थ में। महाभारत, रामायण, प्राचीन कथाकर्ता, कहीं भी यह नाम नहीं पाया जाता। इस भू–भाग के प्राचीनतम नामों एवं मतों को निम्नांकित शीर्षकों में उल्लेखित किया गया हैः

- **दक्षिण कौसलः** छत्तीसगढ़ का प्राचीन नाम दक्षिण कौसल था। बाल्मीकि कृत रामायण में उत्तर कोसल और दक्षिण कोसल का उल्लेख है। संभवतः उत्तर कोसल सरयु तट पर स्थित था जबकि दक्षिण कोसल विन्ध्याचल पर्वत माला के दक्षिण में विस्तीर्ण था। राजा दशरथ की पत्नी कौशल्या इसी दक्षिण कोसल की राजकुमारी थी।[12] प्राप्त अभिलेखों और प्रशस्तियों में भी इस भू–भाग के लिए दक्षिण कोसल का नाम प्रयुक्त हुआ है। रतनपुर शाखा के कल्चुरि शासक जाजल्ल देव के रतनपुर अभिलेख में दक्षिण कोसल नाम अंकित है।[13]
- **कोसलः** कालिदास 'रघुवंशम' में कोसल[14] और उत्तर कोसल का उल्लेख हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि कालिदास युगीन भारत में अवध को उत्तर कोसल और वर्तमान छत्तीसगढ़ प्रदेश के भाग को मात्र कोसल कहा जाता था। इलाहाबाद किला के भीतर स्थित हरिषेण लिखित प्रयाग प्रशस्ति में कोसल का उल्लेख है। निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि गुप्त कालीन भारत में वर्तमान छत्तीसगढ़ भू–भाग का नाम कोसल रहा होगा।
- **महाकोसलः** प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्त अलेक्जेंडर कनिंघम ने अपनी पुरातात्विक रिपोर्ट आर्कियो लॉजिकल सर्वे आफ इंडिया की रिपोर्ट में इस प्रदेश के लिये महाकोसल[15] अमिधा का प्रयोग किया है। छत्तीसगढ़ प्रदेश में प्राप्त ताम्रतत्रों, अभिलेखों, मुद्राओं तथा धार्मिक ग्रंथों में कहीं भी महाकोसल का नाम प्रयोग नहीं हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर कोसल से दक्षिण कोसल को पृथक बनाने के साथ महाविधेषण लगा दिया गया है।
- **चेदिसगढ़ः** रायबहादूर हीरालाल ने छत्तीसगढ़ का प्राचीन नाम चेदिसगढ़ उल्लेख किया है। उनका यह विचार है कि प्रदेश में चेदी वंशीय राजाओं का राज्य था। रतनपुर के शासक चेदि कहलाते थे और उनके द्वारा चलाया गया संवत् भी 'चेदि संवत' कहलाता था। इसके प्रमाण में बिलासपुर जिले के अमोदा ग्राम में प्राप्त एक ताम्रलेख है इसके अंत में चेदिसस्य संवत 831 अंकित है।[16] यही चेदिसगढ़ कालांतर में बिगड़कर छत्तीसगढ़ हो गया है। यह रतनपुर के राजा प्रथम पृथ्वीदेव का दानपत्र है। 1079 ई. में चलाया गया संवत् चेदीस संवत् कहलाता था।

छत्तीसगढ़ के लिये छत्तीसगढ़ नाम कब प्रयोग में आया इस संबंध में प्रमाणिक जानकारी का अभाव है। प्रचलित जनश्रुतियों तथा विभिन्न प्रमाणों के आधार पर छत्तीसगढ़ नामकरण को सिद्ध करने का प्रयास किया गया है। जो इस प्रकार हैः

साहित्य में छत्तीसगढ़ शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम पन्द्रहवीं शताब्दी का कवि दलपत राव जो राजा लक्ष्मी

निधिराय के राज्य खैरागढ़ के चारण कवि थे, 1497 में किया था। एक प्रशस्ति में कहता हैः

लक्ष्मी निधि राय सुनो चित्त दे
गढ़ छत्तीस में न गढ़ैया रही।
मरदुम रही नहीं मरदन के
फेर हिम्मत से न लड़ैया रही।
भय भाव भरे सब कॉप रहे
भय है नहि जाय डरैया नहीं
दलराम भनें सरकार सुनो
नृप कोऊ न ढाल अड़ैया रही।।[17]

किन्तु इतिहास में छत्तीसगढ़ की स्वतंत्र राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक सत्ता की कल्पना कवि गोपालचन्द्र मिश्र द्वारा पहली बार की गई माना जाता है। उनकी कृति ''खूब तमाशा'' में रतनपुर राज्य के लिये सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ शब्द का प्रयोग (संवत् 1746 सन् 1689) मिलता हैः

छत्तीसगढ़ गाढ़े जहां बड़े मड़ोई जानि
सेवा स्वामित्व हो रहे, सके ऐंड को मानि।।[18]

इसी प्रकार बाबू रेवाराम ने सिंहासन बत्तीसी के पद्यानुवाद ''विक्रम विलास'' नामक ग्रंथ में छत्तीसगढ़ शब्द का प्रयोग किया है जिसकी रचना काल संवत 1896 माना गया हैः

तिनमें दक्षिण कौसल देसा,
जंह हरि औतु केसरी बेसा।
तासु मध्य छत्तीसगढ़ पावन,
पुण्य भूमि सुर मुनि मन भावन।
रतनपुरी तिनमें है नायक
काशी सम सब विधि सुखदायक।[19]

छत्तीसगढ़ नाम को लेकर अनेक क्षेत्रीय काव्यों की रचनाएँ भी हुए है। ये रचनाये इस नाम की आधुनिकता को प्रमाणित करती है।

अलेक्जेंडर कनिंघम के सहयोगी अंग्रेज मानवशास्त्री बेगलर 1873–74 ने छत्तीसगढ़ के सर्वेक्षण का कार्य किया था। उसका कहना था कि राजा जरासंघ के कार्यकाल में 36 अनुसूचित जातियों के परिवार इस भाग में आकर बस गए।[20] जिसे छत्तीसघर कहा गया जो कालांतर में छत्तीसगढ़ कहलाने लगा।

शाब्दिक दृष्टि से छत्तीसगढ़ का अर्थ होता है– 36 किले या गढ़। कल्चुरि शासन काल में रतनपुर शाखा एवं रायपुर शाखा के अंतर्गत 18–18 गढ़ थे। इस प्रकार इस क्षेत्र में कुल 36 गढ़ थे। इन गढ़ों के कारण ही वर्तमान छत्तीसगढ़ प्रदेश छत्तीसगढ़ कहलाया। गढ़ों की सूची एक अत्यंत वि श्वसनीय और स्थानीय लेख से प्राप्त हुई जिसका विवरण इस प्रकार है[21]:

क्रं.	शिवनाथ नदी के उत्तर में रतनपुर राज्य के अंर्तगत	क्रं.	शिवनाथ नदी के दक्षिण में रायपुर राज्य के अंर्तगत
1.	रतनपुर	1.	रायपुर
2.	विजयपुर	2.	पाटन
3.	खरौद	3.	सिमगा
4.	मारो	4.	सिंगारपुर
5.	कौटगढ़	5.	लवन

6.	नवागढ़	6.	अमेरा
7.	सोंधी	7.	दुर्ग
8.	औखर	8.	सारधा
9.	पड़रभट्टा	9.	सिरसा
10.	सेमरिया	10.	मोहदी
11.	चांपा	11.	खल्लारी
12.	लाफा	12.	सिरपुर
13.	छुरी	13.	फिंगेश्वर
14.	केण्डा	14.	राजिम
15.	मातीन	15.	सिंघनगढ़
16.	अपरोरा	16.	सुवर माल
17.	पेण्ड्रा	17.	टेंगनागढ़
18.	कुरकुटी–कण्ड्री	18	टकलतरा

इस सूची में वर्णित ये गढ़ यद्यपि आज भी अस्तित्व में है परन्तु इनके नाम और स्वरूप में अब समयानुसार यत्किंचित परिवर्तन हो गया है। रायपुर और बिलासपुर के गजेटियरों में इन गढ़ों का उल्लेख है। मि.चिशम जो बिलासपुर में बंदोबस्त अधिकारी थे, उन्होंने भी अपने रिकार्ड में इनका उल्लेख किया है।[22]

अधिकांश विचारकों का यह मत है कि उक्त सूची में वर्णित गढ़ों के आधार पर ही इस क्षेत्र का नाम छत्तीसगढ़ पड़ा। इस तर्क को और उक्त अभिलेख की प्रमाणिकता को अभी तक किसी ने अमान्य नहीं किया है। अतः यह तर्क इस क्षेत्र के नामकरण के लिये अधिक प्रमाणिक और उचित प्रतीत होता है। अधिकारिक रूप से इस क्षेत्र के लिये छत्तीसगढ़ शब्द का प्रयोग पहली बार सन् 1795 ई. में किया गया।[23] इससे यह अनुमान किया जाता है कि संभवतः मराठा शासन काल में ही इस नाम को प्रसिद्धि मिली हो।[24]

गढ़ों को एक पृथक प्रशासनिक इकाई माना जाता रहा है और इसके अधिकारी को दीवान कहा जाता था।[25] मि.ब्लण्ट ने भी गढ़ों का जिक्र किया है जिसके अनुसार एक–एक गढ़ के अंतर्गत 84 गांव होते थे।[26]

गढ़ की राजनीतिक एवं सामरिक महत्व की उपयोगिता के अनुकूल यह नामकरण का आधार बना क्योंकि पहले राजधानी के नाम के साथ गढ़ों की संख्या जुड़ी रहती थी, जो उस राजा की शक्ति स्पष्ट करने में सहायक थी। हैहयवंशी ये गढ़ प्रशासनिक ईकाई की हैसियत रखते थे। अतः कहा जा सकता है कि हैहय यानि कल्चुरि शासनकाल के अंतिम चरण में ही इस क्षेत्र को छत्तीसगढ़ की अभिधा मिल चुकी रही होगी और उनके अधिकार क्षेत्र रतनपुर और रायपुर शाखा के अंतर्गत पड़ने वाले 18–18 गढ़ मिलकर छत्तीसगढ़ नाम की सार्थकता सिद्ध करते रहे होंगे।

सन् 1741 में छत्तीसगढ़ के राजनीतिक इतिहास में परिवर्तन का काल माना जाता है। इस वर्ष भोंसला सेनापति भास्कर पंत ने छत्तीसगढ़ पर आक्रमण कर रतनपुर के कल्चुरि शासक रघुनाथ सिंह को आत्मसमर्पण कराया तथा इसके पश्चात कलचुरियों का पतन हो गया। रघुनाथ सिंह के मृत्यु के बाद उसी के वंश के मोहन सिंह को गददी पर बैठाया गया। मराठों ने 1757 में बिंबाजी कों छत्तीसगढ़ का प्रथम भोसला शासक बनाया गया। बिंबाजी ने 1787 तक शासन चलाया। उसके बाद व्यंकोजी शासन संभाला जिनके शासनकाल को सूबा शासन कहा जाता है जिसके तहत छत्तीसगढ़ का शासन भोंसलों के प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाता था जो कि 1818 तक रहा। अंग्रेजों ने नागपुर के शासक रघुजी तृतीय के वयस्क होते तक नागपुर राज्य का शासन भार अपने हाथों में रखा। इस नई व्यवस्था के फलस्वरूप 1818 से 1830 तक छत्तीसगढ़ का शासन ब्रिटिश नियंत्रण में चला गया। 1818 में छत्तीसगढ़ की राजधानी परिवर्तित हुई तथा रतनपुर का वैभव काल में समाने लगा वहीं रायपुर का गौरव छत्तीसगढ़ की राजधानी

एवं अंग्रेजों के मुख्यालय होने के कारण निरंतर बढ़ता गया। मार्च 1854 में डलहौजी की हड़प नीति के फलस्वरूप संपूर्ण छत्तीसगढ़ पर ब्रिटिश सत्ता की स्थापना हुई।[27] ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के बाद देश के अन्य भागों के समान ही यहाँ भी स्वतंत्रता आंदोलन प्रारंभ हो गया। भारत देश की आजादी के पश्चात छत्तीसगढ़ दक्षिण पूर्वी मध्यप्रदेश का पर्याय बन गया तथा 1 नवंबर 2000 को मध्यप्रदेश से पृथक होकर छत्तीसगढ़ 26 वाँ राज्य बना।[28] राज्य निर्माण के बाद छत्तीसगढ़ उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर हो रहा है।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ नामकरण पर स्थापित विभिन्न मत–मतांतरों के पश्चात जो तथ्यगत विश्लेषण से विषयांतर्गत पुष्टि होती है, वह यह है कि गढ़ों के आधार पर ही इस क्षेत्र का नामकरण हुआ न कि ''चेदिसगढ़'' या ''36 घर'' से। ऐसा प्रतीत होता है कि मराठा प्रभावान्तर्गत इस नामकरण का ज्यादा प्रचार हुआ होगा क्योंकि रायपुर एवं रतनपुर दोनों उनके नियंत्रण में थे और उन्होंने नागपुर के भोंसला साम्राज्य के अंतर्गत इसे संयुक्त कर रतनपुर और रायपुर की सुविधा को समाप्त कर छत्तीसगढ़ नामकरण को स्वीकारा और आगे इसे एक प्रांत एवं जिला का रूप मिला। छत्तीसगढ़ नामकरण का प्रस्ताव शासकीय आधार पर 1795 ई. में ब्लण्ट ने रखा था, जिसे जेन्किन्स ने ''जमींदार्स आफ छत्तीसगढ़'' के रूप में प्रस्तुत किया था जो आगे चलकर इसी छत्तीसगढ़ के नाम से लोकप्रिय हो गया तथा 1 नवंबर 2000 को छत्तीसगढ़ भारत देश का 26 वां राज्य बना और निरंतर उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर हो रहा है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, पी.सी. *छत्तीसगढ़ बेसीन,* इंडिया रीजनल स्टडीज, पृ. 267।
2. छत्तीसगढ़ शासन डायरी 2017।
3. शुक्ला, सुरेशचंद्र (2002) *छत्तीसगढ़ की रियासतों का विलीनीकरण,* शिक्षादूत ग्रंथागार प्रकाशन रायपुर, पृ. 3।
4. अग्रवाल, पी.सी. पूर्वोक्त, पृ. वही।
5. वर्मा, भगवान सिंह (2003) *छत्तीसगढ़ का इतिहास,* मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृ. 01।
6. श्रीवास्तव, निर्मलकांत (2009) *छत्तीसगढ़ की रियासतों में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास,* छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृ. 32।
7. छत्तीसगढ़ शासन डायरी 2017।
8. अग्रवाल, पी.सी.,पूर्वोक्त, पृ. वही।
9. शुक्ला, सुरेशचंद्र, पूर्वोक्त, पृ. 3।
10. पूर्वोक्त, पृ. 34।
11. वर्मा, भगवान सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 2–3।
12. गुप्त, प्यारेलाल (1973) *प्राचीन छत्तीसगढ़,* पं. रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर, पृ. 218।
13. रतनपुर का शिलालेख–क्षोणी दक्षिण कोसल जनपद बहुद्देये नादिति।
14. कालिदास, *रघुवंशम,* श्लोक 17 नवम सर्ग।
15. कनिंघम, अलेक्जेंडर (1878) आर्कियोलॉजिकल सर्वे आफ इंडिया रिपोर्ट, भाग 17, पृ. 68.।
16. हीरालाल (1916) डिस्क्रिप्टिव लिस्ट ऑफ इन्सक्रिप्शन इन सी.पी. एण्ड बरार, पृ. 116।

17. गुप्त, प्यारे लाल, (2018) *प्राचीन छत्तीसगढ़,* छत्तीसगढ़ राज्य हिंदी ग्रंथ अकादमी, रायपुर, पृ. 64।
18. पूर्वोक्त।
19. पूर्वोक्त।
20. हीरालाल, पूर्वोक्त, पृ. 224।
21. वर्मा, भगवान सिंह, पूर्वोक्त, पृ. 7।
22. पूर्वोक्त, पृ. 8।
23. बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, 1909, पृ. 38।
24. *जर्नल आफ एसियाटिक सोसायटी आफ बंगाल,* जिल्द 15, 1829, पृ. 200।
25. बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, 1909, पृ. 44।
26. अर्ली यूरोपियन ट्रेवलर इन दि नागपुर टेरीटरीज, शासकीय प्रकाशन, नागपुर, 1930, पृ. 116।
27. शर्मा, अरविंद (2005–06) *छत्तीसगढ़ का राजनीतिक इतिहास,* देवदूत तिवारी, बिलासपुर, पृ. 14।
28. मिश्र, बबन प्रसाद, मध्य रात्रि में सूर्योदय, लेख *नवभारत,* दिनांक 01.11.2000।

——==00==——